

डॉ. रॉबर्ट वैनॉय , सैमुअल्स, व्याख्यान 2

© 2011, डॉ. रॉबर्ट वैनॉय और टेड हिल्डेब्रांट

जैसा कि हमने अपने पिछले सत्र के अंत में उल्लेख किया था, इस्राएल के लोगों द्वारा अनुरोधित राजत्व वाचा का खंडन और यहोवा की अस्वीकृति थी, जो उनका राजा था। लेकिन जब शमूएल ने यहोवा के आदेश पर इस्राएल को राजा दिया, तो उसने ऐसा इस तरह से किया जो वाचा के अनुरूप हो और मानवीय राजत्व को ईश्वरतंत्र की संरचना में एकीकृत करे। इसका पहला संकेत मिस्रे में समारोह में मिलता है जहाँ शाऊल को सार्वजनिक रूप से इस्राएल का पहला राजा बनने के लिए चुना गया था। हम 1 शमूएल 10:17-27 में मिस्रे समारोह का वर्णन पाते हैं। उस अंश में, शाऊल पर चिट्ठी पढ़ने के बाद, उसे शमूएल द्वारा एकत्रित सभा के सामने इस रूप में प्रस्तुत किया गया कि वह वही है जिसे यहोवा ने उनका राजा चुना था। शाऊल शाही कद का एक प्रभावशाली व्यक्ति था। वह सभा में किसी और से भी ऊँचा था (श्लोक 23)। लोगों ने तुरंत उसका उत्साहपूर्वक स्वागत किया और चिल्लाए, “राजा अमर रहे!” (श्लोक 24)। यह बिल्कुल वैसा ही राजा था जैसा वे चाहते थे। लेकिन शमूएल नहीं चाहता था कि लोग यह सोचें कि चूँकि उन्हें राजा दिया गया है, इसका मतलब यह है कि उनका राजा भी उसी तरह शासन करेगा जैसे आस-पास के देशों के राजा करते थे।

इसलिए शमूएल ने उन्हें यह समझाने में बहुत सावधानी बरती कि राजत्व के नियमों के पाठ में क्या कहा गया है - अधिक शाब्दिक रूप से, राज्य का तरीका। 1 शमूएल 10:25 जहाँ आप NIV अनुवाद में पढ़ते हैं, “शमूएल ने लोगों को राजत्व के नियम समझाए।” ऐसा करके, शमूएल ने लोगों की राजा के लिए पापपूर्ण इच्छा और उनके अनुरोध के लिए प्रभु की सहमति के बीच तनाव को हल करने की दिशा में पहला कदम उठाया। दुर्भाग्य से, शमूएल द्वारा पवित्रस्थान में जमा किए गए लिखित नियमों की कोई प्रति नहीं बची है। आप पद 25 बी में पढ़ते हैं, “उसने उन्हें एक स्क्रॉल पर लिखा और प्रभु के सामने रख दिया।” उन नियमों की सटीक सामग्री चाहे जो भी रही हो, यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे इस्राएली राजाओं के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का अधिक पूर्ण विवरण रहे होंगे जो मूसा ने व्यवस्थाविवरण 17:14-20 में दिए थे - एक ऐसा अंश जिसे अक्सर “राजा का कानून” कहा जाता है। और निश्चित रूप से उन्होंने राजत्व को एक संवैधानिक सम्राट के रूप में

वर्णित किया होगा। दूसरे शब्दों में, इस्राएल के राजाओं के पास स्वायत्त शक्ति नहीं होगी। वे हमेशा सिनाई वाचा के कानूनों और भविष्यवक्ताओं के शब्दों के अधीन रहेंगे। इस्राएल में राजत्व को ईशतंत्र की वाचागत संरचना में एकीकृत किया जाएगा। यह राष्ट्र पर प्रभु की निरंतर संप्रभुता के अनुरूप होगा और इसका उद्देश्य अपने लोगों पर प्रभु के शासन के लिए एक वाहन के रूप में काम करना था। सार्वजनिक रूप से उस व्यक्ति के रूप में नामित होने के बाद जिसे प्रभु ने राजा होने के लिए चुना था, शाऊल गिबा में अपने घर लौट आया। हम इसके बारे में 1 शमूएल 10:26 में पढ़ते हैं। शाऊल गिबा में अपने घर चला गया। और वह पहले की तरह खेतों में काम करता रहा। अध्याय 11 पद 5 में हम पाते हैं कि शाऊल अपने बैलों के पीछे खेतों से लौट रहा था जब दूत उसे अम्मोनियों के खतरे के बारे में बताने आए। इसलिए वह अपने घर लौट आया और पहले की तरह अपना काम करने लगा।

1 शमूएल 9:1-10:16 में निजी अभिषेक द्वारा शाऊल को राजा के रूप में चुना जाना, और फिर 1 शमूएल 10:17-27 में चिट्ठी द्वारा सार्वजनिक चयन द्वारा तीन चरणों वाली प्रक्रिया में पहला चरण दर्शाया गया जिसके द्वारा इस्राएल में राजतंत्र को संचालन में रखा गया था। तीन चरणों वाली प्रक्रिया में पदनाम शामिल था: उसका अभिषेक किया गया, उसे चिट्ठी द्वारा चुना गया, फिर इसमें पुष्टि हुई और अंत में उद्घाटन हुआ। 1 शमूएल 11 दूसरे और तीसरे चरण का वर्णन करता है। शाऊल को राजा के रूप में चुना गया है, लेकिन यह 11 में शाऊल की अम्मोनियों पर जीत के साथ है जहाँ आप शाही पद पर उसकी नियुक्ति की पुष्टि पाते हैं, और यह 1 शमूएल 11:1-13 में दर्ज है, और इसके तुरंत बाद शमूएल द्वारा गिलगाल में आयोजित वाचा नवीनीकरण समारोह में राजा के रूप में उसका उद्घाटन हुआ और 11:14 से अध्याय 12, श्लोक 25 के अंत तक इसका वर्णन किया गया है।

जब अम्मोनी नाहाश ने इस्राएल के उत्तरपूर्वी क्षेत्र में स्थित शहर याबेश गिलाद पर हमला किया और उसे घेर लिया, तब याबेश गिलाद के पुरनियों ने शाऊल के घर गिबा में सहायता मांगने के लिए दूत भेजे। जब हम याबेश गिलाद के सामने आए संकट के बारे में जानते हैं, तब हम 1 शमूएल 11:6 में पढ़ते हैं कि परमेश्वर की आत्मा शाऊल पर उतरी, वह क्रोध से जलने लगा, उसने

यहूदा और इस्राएल के योद्धाओं को बेजेक में इकट्ठा होने के लिए बुलाया, जो उत्तरी इस्राएल में याबेश गिलाद से लगभग 17 मील पश्चिम में एक स्थान है। और उसने उन्हें देश भर में दो बैलों के टुकड़े भेजकर बुलाया, साथ में यह संदेश भी भेजा कि जो लोग शमूएल और उसके द्वारा भेजे गए बुलावे का जवाब नहीं देंगे, उनके बैलों के साथ भी यही सलूक किया जाएगा। परिणाम यह हुआ कि 330,000 योद्धा तुरंत बेजेक में इकट्ठा हो गए। शाऊल का क्रोध और उसके परिणामस्वरूप परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रेरित कार्य ने उसे प्रभु और उसके लोगों इस्राएल के सम्मान की रक्षा करने के लिए अवसर पर उठने के लिए सशक्त बनाया और शाऊल में परमेश्वर की आत्मा के कार्य के साथ-साथ परमेश्वर ने उन लोगों पर भय उत्पन्न किया जिन्हें सम्मन भेजा गया था ताकि वे इसे कुछ ऐसा समझें जिसे वे अनदेखा नहीं कर सकते, हम इसे पद 7बी में पढ़ते हैं। शाऊल ने याबेश को यह आश्वासन देते हुए संदेश भेजा कि अगले दिन के मध्य तक, शहर को अम्मोनियों के खतरे से मुक्त कर दिया जाएगा, हम इसे 1 शमूएल 11:9 में पढ़ते हैं। उस अच्छी खबर को प्राप्त करने पर, याबेश के नेताओं ने चतुराई से नाहाश से कहा कि अगले दिन वे "उसके पास बाहर आएंगे" जिसका अर्थ है, लेकिन शाब्दिक रूप से नहीं, कि वे आत्मसमर्पण करेंगे; अब मैं यह NIV अनुवाद के विपरीत कहता हूँ जो "आत्मसमर्पण" शब्द का उपयोग करता है, लेकिन यह मूल पाठ में नहीं है। लेकिन उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास बाहर आएंगे, और फिर वह उनके साथ जो चाहे कर सकता है (पद 10)। लेकिन रात के समय शाऊल ने अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए अम्मोनियों के शिविर पर अचानक हमला किया और अगले दिन दोपहर तक अम्मोनियों की सेना या तो मर गई या उन्हें भगा दिया गया। और प्रभु ने शमूएल को अम्मोनियों पर शानदार जीत दिलाई।

जब कुछ लोगों ने मांग की कि जिन लोगों ने शाऊल के राजा बनने के योग्य होने पर सवाल उठाया था, जो कि मिस्पेह में सार्वजनिक रूप से चिट्ठी डालकर चुने जाने के बाद हुआ था, उन्हें पकड़कर मार दिया जाना चाहिए। शाऊल ने घोषणा की कि किसी को भी मृत्युदंड नहीं दिया जाएगा, क्योंकि उसने कहा, यह वह नहीं था, बल्कि यहोवा था जिसने इस्राएल को बचाया था (श्लोक 11, अध्याय 13) शाऊल ने कहा, "आज किसी को भी मृत्युदंड नहीं दिया जाएगा, क्योंकि आज के दिन यहोवा ने इस्राएल को बचाया है।" उस बिंदु पर शाऊल की प्रतिक्रिया वाचागत राजत्व की वास्तविक प्रकृति के बारे में स्पष्ट अंतर्दृष्टि दिखाती है। इस्राएल की सुरक्षा किसी मानव राजा के

अस्तित्व या प्रदर्शन पर निर्भर नहीं थी। यह वाचा-पालन करने वाले परमेश्वर की कृपा और वादों पर निर्भर थी। शाऊल ने सही ढंग से समझा कि यह यहोवा ही था जिसने इस्राएल को अम्मोनियों पर विजय दिलाई थी। इसलिए शाऊल के नेतृत्व में अम्मोनियों पर इस्राएल की जीत ने शाही पद पर उसकी नियुक्ति की स्पष्ट पुष्टि की, और इसने उसके शासन के उद्घाटन को जन्म दिया, और इसका वर्णन 1 शमूएल 11:14-12:25 में किया गया है। यहाँ सबसे खास बात यह है कि जब शमूएल ने शाऊल के शासन का उद्घाटन करने के लिए सभी इस्राएलियों को गिलगाल आने के लिए बुलाया, तो उसने ऐसा एक समारोह में किया जिसमें यहोवा के प्रति निष्ठा की पुनः पुष्टि के लिए राजत्व की स्थापना की गई थी। यह हमें इस प्रस्ताव पर विचार करने के लिए लाता है कि शमूएल द्वारा स्थापित राजत्व वाचा के अनुरूप था। याद रखें, शाऊल द्वारा अनुरोधित राजत्व वाचा का खंडन था। अब हम पाते हैं कि शमूएल द्वारा स्थापित राजत्व वाचा के अनुरूप था। शाऊल के कबूलनामे के आधार पर, अम्मोनियों पर जीत का श्रेय उसे नहीं बल्कि प्रभु को दिया जाना था। शमूएल ने गिलगाल में एक सभा आयोजित करने का आह्वान किया, ताकि "राज्य को नया बनाया जा सके।" 1 शमूएल 11:14, "आओ हम गिलगाल जाएँ और राज्य को नया बनाया जाए।" अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि शमूएल जिस राज्य को नया बनाना चाहता था, वह शाऊल का राज्य था। हालाँकि, मुझे लगता है कि यह समझ कई सवाल उठाती है, जिनमें से सबसे कम सवाल यह नहीं है कि अगर शाऊल ने अभी तक अपना शासन शुरू नहीं किया था, तो उसका राज्य कैसे नया बनाया जा सकता था। मिस्रे सभा के बाद, शाऊल गिबा में अपने घर वापस चला गया था और खेतों में काम करना फिर से शुरू कर दिया था (1 शमूएल 11:5)। उसने आधिकारिक तौर पर राजा के रूप में अपना शासन शुरू नहीं किया था। वास्तव में, शाऊल को राजा बनाना, यानी उसके शासन का उद्घाटन करना, उन चीजों में से एक था जिसे शमूएल ने गिलगाल सभा में करने का इरादा किया था जैसा कि हमें श्लोक 15 में बताया गया है। "आओ हम गिलगाल जाएँ और राज्य को नया बनाया जाए।" आप श्लोक 15 में पढ़ते हैं, "वे गिलगाल गए और शाऊल को यहोवा की उपस्थिति में राजा बनाया।"

1 शमूएल 9-11 में घटनाओं के अनुक्रम के स्रोत और परंपरा इतिहास विश्लेषणों में, सबसे

आम निष्कर्ष यह है कि "आइए हम गिलगाल जाएँ और राज्य को नया बनाएं" वाक्यांश और 11:14 को एक संपादन या संपादकीय प्रविष्टि के रूप में देखें, जिसने 1 शमूएल 11 में वर्णित अम्मोनियों पर जीत के बाद जयजयकार करके शाऊल के राजा बनने की परंपरा को बदलने का प्रयास किया है, ताकि इसे उसके राजत्व के नवीनीकरण में बदल दिया जा सके। ऐसा क्यों? इस गिलगाल परंपरा को कथित रूप से परस्पर विरोधी परंपरा के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए कि वह 10:17-27 में मिस्रे में एक सभा में लाटरी द्वारा चुने जाने के बाद राजा बना। दूसरे शब्दों में, विचार यह है कि आपके पास इस बारे में दो परस्पर विरोधी परंपराएँ हैं कि शाऊल वास्तव में कैसे राजा बना, और एक संपादक ने इन दोनों को एक नवीनीकरण में बदलकर सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है। बीसी बिर्च इस स्थिति का एक प्रतिनिधि सारांश देते हैं जब वे कहते हैं, "अधिकांश विद्वानों ने इस पद, 11:14 को इस अध्याय में संपादन गतिविधि का सबसे स्पष्ट सबूत माना है, और इस निष्कर्ष को चुनौती देने के लिए बहुत कम कारण प्रतीत होते हैं। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि एक संपादक ने परंपराओं को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया में, जैसा कि हम अब करते हैं, एक स्पष्ट दोहराव को सुसंगत बनाने का प्रयास किया है।" शाऊल पहले ही 10:24 में राजा बन चुका है। इसलिए 11:15 का उदाहरण एक "नवीनीकरण" में बदल गया है। हालाँकि, यदि आप इस वाक्यांश में "राज्य" शब्द को शाऊल के राज्य के संदर्भ के रूप में समझते हैं, तो यह समझाना मुश्किल है, हालाँकि शायद असंभव नहीं है, कि शाऊल के राज्य को कैसे नवीनीकृत किया जा सकता था यदि उसे अभी तक राजा नहीं बनाया गया था (पद 15)।

अब मैं यहाँ NIV अनुवाद के बारे में एक टिप्पणी कर सकता हूँ। यदि आप इस आयत को NIV में पढ़ते हैं, तो मुझे लगता है कि NIV ने हिब्रू शब्द *חדש*, जिसका अर्थ है "नवीनीकृत" का अनुवाद "राजत्व को पुनः पुष्ट करना" के रूप में करके इन दो आयतों में समस्या को सुधारने का प्रयास किया है, बजाय "राजत्व को पुनः पुष्ट करना" के। NIV कहता है, "शमूएल ने लोगों से कहा, आओ हम गिलगाल जाएँ और राजत्व को पुनः पुष्ट करें।" और उन्होंने आयत 15 में भी अनुवाद किया है, "इसलिए सभी लोग गिलगाल गए और शाऊल को राजा बनाया," उन्होंने इसका अनुवाद "शाऊल को राजा के रूप में पुष्ट करना" के रूप में किया है। हालाँकि, वहाँ शब्द का अर्थ है, "एक राजा के शासनकाल का उद्घाटन करना।" वहाँ क्रिया रूप में हिफिल की 49 घटनाएँ हैं, और हर

मामले में उनका मतलब “राजा के शासनकाल की पुष्टि करना” नहीं है, उनका मतलब है “किसी को राजा बनाना।” टीएनआईवी, टुडेज न्यू इंटरनेशनल वर्जन ने इस आयत के एनआईवी के अनुवाद में सुधार किया है, और इसमें लिखा है, “आइए हम गिलगाल जाएं और वहां राजत्व को नवीनीकृत करें।” वे “पुनः पुष्टि” के बजाय “पुनः पुष्टि” शब्द का उपयोग करते हैं। इसलिए सभी लोग गिलगाल गए और राजत्व को पुनः पुष्टि करने के बजाय शाऊल को राजा बनाया। इसलिए आप जो अनुवाद पढ़ते हैं, उसके आधार पर आपको इन दो बहुत महत्वपूर्ण आयतों (1 शमूएल 11:14-15) में क्या चल रहा है, इसका पूरा सार नहीं मिल सकता है।

लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा था कि, मुझे लगता है कि इस वाक्यांश में “राज्य” को समझना बेहतर है, “आओ हम गिलगाल जाएं और राज्य को नया करें,” यहोवा के राज्य के संदर्भ में। वास्तव में, जब आप 1 शमूएल 8-12 में चल रही सभी बातों को देखते हैं, तो इस्राएल का यहोवा के राजत्व को अस्वीकार करना केंद्रीय मुद्दा है जो 1 शमूएल 8-12 की संपूर्णता में चलता है। जब इस्राएल ने एक मानव राजा की मांग की, तो उन्होंने प्रभु को अस्वीकार कर दिया, जो उनके राजा थे। यह 8:7, 10:19, 12:12 में स्पष्ट है, प्रभु के राजत्व को अस्वीकार करने से प्रभु और उनके लोगों के बीच सिनाई में स्थापित वाचा संबंध नष्ट हो गया। इस दुष्टता के बावजूद, जैसा कि इसे इस्राएल की ओर से कहा गया है, 1 शमूएल 12:17 और 19, अब जबकि शाऊल के राज्याभिषेक का समय आ गया है, शमूएल ने इसे एक ऐसे समारोह में सम्पन्न करने का निर्णय लिया, जिसने न केवल शाऊल के शासन का उद्घाटन किया, बल्कि, मैं कहूंगा कि इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि, प्रभु और उसके लोगों के बीच टूटे हुए वाचा के रिश्ते को पुनः स्थापित किया।

1 शमूएल 11:14 से 12:25 में जो महत्वपूर्ण बात होती है, वह यह है कि इस्राएल में राजत्व वाचा के नवीनीकरण के संदर्भ में स्थापित होता है। यह केवल इस्राएल द्वारा प्रभु को अपने दिव्य राजा के रूप में निरंतर मान्यता देने की पुष्टि के संबंध में ही है कि मानवीय राजत्व ईशतंत्र की संरचना में अपना उचित स्थान ग्रहण कर सकता है। तो 1 शमूएल 11:14-15 गिलगाल सभा के लेन-देन का परिचय देता है और संक्षेप में उसका सारांश देता है। उसी सभा का अधिक विस्तृत विवरण 1 शमूएल 12, पूरे अध्याय, पद 1-25 में दिया गया है। यदि आप उन दो, शायद, मूल रूप से स्वतंत्र

साहित्यिक इकाइयों, 1 शमूएल 11:14-15 और 1 शमूएल 12:1-25 की तुलना करें, तो मुझे लगता है कि आप पाएंगे कि दोनों इकाइयाँ अपने प्रमुख जोर में सहमति प्रकट करती हैं। और दो, वाचा निरस्तीकरण के बाद वाचा संगति की बहाली।

1 शमूएल 11:14-15 में, नेतृत्व के विचार में परिवर्तन शाऊल के उद्घाटन के संदर्भ में देखा जाता है। उन्होंने शाऊल को राजा बनाया (श्लोक 15)। वाचा निरस्तीकरण विषय के बाद वाचा संगति की बहाली, शांति बलिदान के संदर्भ में देखी जाती है, जिसका उल्लेख श्लोक 15 में किया गया है, और लोगों का आनन्द। शाब्दिक रूप से, लोगों ने बहुत आनन्द मनाया।

अध्याय 12 में, नेतृत्व विषय में परिवर्तन शमूएल द्वारा राष्ट्र के अपने पिछले नेतृत्व के दौरान अपनी स्वयं की वाचा के प्रति वफादारी के बारे में दी गई गवाही में देखा जाता है, साथ ही साथ ईश्वरतंत्र की नई संरचना में उनके निरंतर भविष्यसूचक कार्य के रूप में मानवीय राजत्व ईश्वरतंत्र की संरचना में एक वैध स्थान ग्रहण करता है। वाचा निरस्तीकरण विषय के बाद वाचा संगति की बहाली शमूएल द्वारा राजा के अनुरोध में इस्राएल के धर्मत्याग के कानूनी प्रदर्शन पर केंद्रित है (जो कि छंद 6-12 में है), और फिर राजा के लिए उनकी गलत तरीके से प्रेरित इच्छा में उनके पाप के बारे में इस्राएल के कबूलनामे पर, और इसका वर्णन छंद 16-22 में किया गया है।

दोनों परिच्छेदों, 11:14-15 और 12:1-25 में, सभा का प्राथमिक उद्देश्य यहोवा के प्रति निष्ठा का नवीनीकरण है। यह उद्देश्य अध्याय 12 में गिलगाल सभा के विस्तृत विवरण में शाऊल के शपथग्रहण से कहीं अधिक प्रमुख है। हां, दोनों परिच्छेदों में शाऊल के राजा के रूप में शपथग्रहण का उल्लेख किया गया है, लेकिन यह केवल यहोवा को इस्राएल के सच्चे संप्रभु के रूप में निरंतर मान्यता की पुनः पुष्टि के संबंध में होता है। और आप पाते हैं कि यह वास्तव में उस कथन में केंद्रित है, “आओ हम गिलगाल चलें, और राज्य को, यहोवा के राज्य को, नवीनीकृत करें” 11:14 में, और फिर 12:14-15 में। यह वह परिप्रेक्ष्य है जो बताता है कि शमूएल कैसे कह सका, “आओ हम राज्य को नवीनीकृत करने के लिए गिलगाल चलें,” यह यहोवा के साथ वाचा के रिश्ते का नवीनीकरण है। जब 1 शमूएल 11:14-15 को इस तरह से लिया जाता है, और सीधे 1 शमूएल 12 के वाचा संबंधी फोकस से जोड़ा जाता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि गिलगाल सभा में शमूएल की प्राथमिक चिंता

ईश्वरतंत्र के इस महत्वपूर्ण पुनर्गठन के दौरान वाचा की निरंतरता प्रदान करना था, साथ ही राष्ट्र के नेतृत्व को खुद से शाऊल को सौंपना था।

यह पहली बार नहीं है कि वाचा नवीनीकरण को नेतृत्व में परिवर्तन के साथ जोड़ा गया है। जब मूसा की मृत्यु निकट थी, तो उसने मोआब के मैदानों पर वाचा नवीनीकरण में इस्राएल का नेतृत्व किया। जिसका उद्देश्य उसके नेतृत्व से यहोशू के नेतृत्व में परिवर्तन के माध्यम से वाचा की निरंतरता सुनिश्चित करना था। और यह, वास्तव में, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के प्रमुख विषयों में से एक है। नेतृत्व का संक्रमण, आप इसे वंशवादी उत्तराधिकार कह सकते हैं, मूसा से यहोशू तक, लेकिन यहोवा के प्रति निष्ठा के नवीनीकरण के संदर्भ में रखा गया है। जब यहोशू बूढ़ा और स्वस्थ हो गया, तो उसने शेकेम (यहोशू 24) में एक सभा बुलाई। जिसमें, इस्राएल को यहोवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने की चुनौती दी गई क्योंकि वे न्यायियों की अवधि में प्रवेश कर रहे थे। तो फिर से, वाचा नवीनीकरण राष्ट्र के लिए नेतृत्व में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है।

1 शमूएल 11:14-12:25 राष्ट्र के लिए नेतृत्व में अगले महत्वपूर्ण परिवर्तन का वर्णन करता है, क्योंकि गिलगाल सभा में यह कार्रवाई न्यायाधीशों की अवधि के अंत और ईश्वरीय शासन की एक पूरी तरह से नई संरचना की शुरुआत को चिह्नित करती है - राज्य की अवधि। और यहाँ फिर से, नेतृत्व में परिवर्तन की अवधि के माध्यम से वाचा की निरंतरता, कुछ ऐसा है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है। मानवीय राजत्व अब अपने लोगों पर प्रभु के शासन का एक साधन बनना है। यह प्राचीन इस्राएल में राज्य काल की शुरुआत है। और इसकी शुरुआत में ही, राजत्व वाचा में एकीकृत हो जाता है। इस बिंदु से आगे, राजत्व और वाचा अविभाज्य होंगे। वाचा राजत्व के लिए मानदंड प्रदान करेगी, और राजत्व वाचा प्रशासन की एक अभिन्न विशेषता के रूप में कार्य करेगा।

अब, आइए गिलगाल में आयोजित इस वाचा नवीनीकरण समारोह के विस्तृत विवरण पर करीब से नज़र डालें जो हमें 1 शमूएल के अध्याय 12 की आयत 1-25 में मिलता है। यहाँ हम उस समारोह का विवरण पाते हैं जिसमें शमूएल ने इस्राएल को चुनौती दी कि वह ईश्वरीय व्यवस्था की संरचना में राजत्व के प्रवेश के अवसर पर यहोवा के प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत करे। जब शमूएल ने शाऊल को लोगों के सामने उनके नए राजा के रूप में पेश किया, तो उसने सबसे पहले

लोगों से राष्ट्र के आध्यात्मिक और नागरिक नेता के रूप में अपने पद के पिछले आचरण के दौरान अपनी वाचा के प्रति अपनी वफादारी का न्यायिक औचित्य प्राप्त किया। हम इसे आयत 3-5 में पाते हैं। इस औचित्य के निहितार्थ न केवल यह हैं कि शमूएल का नेतृत्व एक ऐसे नेतृत्व की तरह रहा है जिसका अनुकरण एक नए स्थापित राजा को करना चाहिए, बल्कि यह भी है कि शमूएल की पिछली ईमानदारी एक भविष्यवक्ता और राष्ट्र के आध्यात्मिक नेता के रूप में उनकी निरंतर भूमिका में भविष्य के विश्वास के लिए एक ठोस आधार प्रदान करती है।

कुछ लोगों ने 1 शमूएल 12 को "शमूएल का विदाई भाषण" शीर्षक दिया है। यह विदाई भाषण नहीं है। ईश्वरीय व्यवस्था में उसका एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य जारी रहेगा। लेकिन शमूएल, हमें उन शुरुआती आयतों में बताया गया है, उसने अपने नेतृत्व की स्थिति का इस्तेमाल किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं किया है। उसने न्याय में बाधा नहीं डाली या उसे विकृत नहीं किया और सबसे खास बात यह है कि उसने लोगों से "कुछ नहीं लिया"। क्या आपको 1 शमूएल 8 में दी गई चेतावनी याद है कि राष्ट्रों की तरह एक राजा भी "कुछ नहीं लेगा।" हम यहाँ पढ़ते हैं कि शमूएल ने कुछ नहीं लिया, उसने किसी को धोखा नहीं दिया, उसने किसी पर अत्याचार नहीं किया, उसने रिश्वत नहीं ली। उसका नेतृत्व एक ऐसा नेतृत्व रहा है जो वाचा के कानून की आवश्यकताओं के साथ पूरी तरह से सुसंगत रहा है। उसने अपने पूरे जीवन में प्रभु और प्रभु के लोगों के सच्चे सेवक के रूप में अपने कर्तव्यों का पालन किया।

पद 6 से 12 में शमूएल राष्ट्र के अपने पिछले नेतृत्व के चरित्र से हटकर लोगों द्वारा राजा के लिए अनुरोध के मामले की ओर मुड़ता है। शमूएल ने उनके अनुरोध को एक वाचा तोड़ने वाला कार्य और एक गंभीर धर्मत्याग माना। राष्ट्र की स्थापना में यहोवा की प्रधानता पर जोर देने के बाद, आप पद 6 में पढ़ते हैं, शमूएल ने कहा, "यह यहोवा ही है जिसने मूसा और हारून को नियुक्त किया और तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर निकाला।" और पद 7-12 में यह जोर देने के बाद कि शमूएल ने गिलगाल सभा की दूसरी कानूनी पूर्ववर्ती शुरुआत की। और आप जो उम्मीद कर सकते हैं उसके विपरीत शमूएल ने राजा के लिए अनुरोध करने में लोगों के व्यवहार को ध्यान का प्रारंभिक केंद्र नहीं बनाया। इसके बजाय, उसने यहोवा के धार्मिक कार्यों की न्यायिक जांच का उपयोग उनके दुष्ट आचरण को उजागर करने के लिए एक आवरण के रूप में किया और इस प्रकार उनके

अभियोग के लिए एक साधन के रूप में किया। आप श्लोक 7 में पढ़ते हैं, शमूएल कहता है, "अब यहाँ खड़े हो जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे और तुम्हारे पूर्वजों के लिए किए गए सभी धार्मिक कार्यों के बारे में यहोवा के सामने सबूत के साथ तुम्हारा सामना करने जा रहा हूँ (यह NIV अनुवाद है)। अधिक शाब्दिक रूप से यह है, "यहाँ खड़े हो जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे साथ यहोवा के सामने कानूनी कार्यवाही करने जा रहा हूँ।"

पद 8-11 में प्रभु के धार्मिक कार्यों का सारांश उनके पिछले इतिहास में प्रभु की वाचा की वफादारी की स्थिरता पर जोर देने के लिए बनाया गया है। उनकी अपनी बेवफाई के विपरीत। यह प्रभु ही है जिसने इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया था। उसने उन्हें कनान की भूमि दी थी। लेकिन इस्राएल बार-बार प्रभु से दूर होकर मूर्तिपूजा करने लगा था।

यह महत्वपूर्ण है कि शमूएल ने अपना नाम उन मुक्तिदाताओं की सूची में शामिल किया जिन्हें प्रभु ने भेजा था। वह ऐसा पद 11 में करता है क्योंकि ऐसा करके वह उस समय तक प्रभु के शक्तिशाली धार्मिक कार्यों का ऐतिहासिक सारांश प्रस्तुत करता है जब लोगों ने आस-पास के राष्ट्रों की तरह एक राजा की इच्छा व्यक्त की थी। यह स्पष्ट है कि इस्राएल के हाल के इतिहास में भी प्रभु ने उनकी सुरक्षा के लिए प्रावधान करना जारी रखा था। 1 शमूएल के अध्याय 7 में, यह शमूएल ही था जिसने इस्राएलियों को पलिशतियों पर विजय दिलाई जब लोगों ने पश्चाताप किया और अपनी मूर्तियों से विमुख होकर प्रभु के पास लौट आए।

शमूएल के ऐतिहासिक सारांश का चरमोत्कर्ष पद 12 में मिलता है, जहाँ लोगों की राजा की चाहत को अम्मोनी नाहाश के खतरे से मुक्ति पाने के लिए स्पष्ट रूप से यहोवा के राजत्व को अस्वीकार करने के रूप में दर्शाया गया है, और इस प्रकार धर्मत्याग की एक लंबी श्रृंखला में अंतिम है। आप पद 12 में पढ़ते हैं, शमूएल कहता है, "जब तुमने देखा कि अम्मोनियों का राजा नाहाश तुम्हारे खिलाफ आगे बढ़ रहा है, तो तुमने मुझसे कहा, 'नहीं, हमें अपने ऊपर शासन करने के लिए एक राजा चाहिए,' भले ही तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा था।" पद 13 में शमूएल ने शाऊल को लोगों के सामने पेश किया और इस बात पर जोर दिया कि यह यहोवा ही था जिसने उन्हें एक राजा दिया था। यहाँ सकारात्मक कथन है। पद 13, "अब यह वह राजा है जिसे तुमने चुना है, जिसे

तुमने मांगा था, देखो यहोवा ने तुम्हारे ऊपर एक राजा नियुक्त किया है। इस्राएल के लिए एक राजा होना परमेश्वर के शाश्वत उद्देश्यों में था। इसलिए इस्राएल के धर्मत्याग के बावजूद यह यहोवा की इच्छा थी कि इस्राएल को एक राजा दिया जाए। उस दिन से आगे राजत्व का उद्देश्य अपने लोगों पर प्रभु के शासन के एक साधन के रूप में कार्य करना था।

इससे हम श्लोक 14 और 15 पर आते हैं। श्लोक 14 और 15 महत्वपूर्ण हैं। यहाँ शमूएल ने इस्राएल को यहोवा के प्रति पूर्ण और समग्र निष्ठा के उसके निरंतर दायित्व के बारे में बताया। अब जबकि मानवीय राजत्व को ईश्वरतंत्र की संरचना में एकीकृत किया जा रहा है। मुझे लगता है कि अगर आप श्लोक 14 और 15 को देखेंगे तो आप इसे ऐसे शब्दों में पाएंगे जिसे आप वाचा के सूत्र में कह सकते हैं, इस्राएल का यहोवा के प्रति मूलभूत दायित्व। ये श्लोक सिनाई वाचा की मूल शर्त का प्रतिनिधित्व करते हैं। और शमूएल ने उस मूल शर्त को यहाँ सशर्त शब्दावली "अगर" में रखा है ताकि लोगों को राजशाही के इस नए युग में प्रवेश करने के लिए अब उनके सामने खुले विकल्पों से रूबरू कराया जा सके। इस मूल शर्त के प्रति आज्ञाकारिता या अवज्ञा यह निर्धारित करेगी कि इस्राएल एक राष्ट्र के रूप में अपने भविष्य के जीवन में ईश्वर के आशीर्वाद या अभिशाप का अनुभव करेगा या नहीं।

अब यह हमें पद 14 में अनुवाद के मुद्दे पर ले आता है। व्याख्याकारों की लंबे समय से आम सहमति रही है कि पद 14 में एक प्रोटैसिस है जो सशर्त वाक्य में स्थिति को व्यक्त करने वाला अधीनस्थ खंड है लेकिन इसमें अपोडोसिस का अभाव है। और पद 14 के लिए आमतौर पर अपनाया गया अनुवाद उसी के समान है जो आपको संशोधित मानक संस्करण के साथ-साथ NIV में भी मिलेगा और यह इस प्रकार है, "यदि आप प्रभु का भय मानेंगे और उसकी सेवा करेंगे और उसकी आवाज़ सुनेंगे और प्रभु की आज्ञा के विरुद्ध विद्रोह नहीं करेंगे और यदि आप और आपका राजा जो आप पर शासन करता है, दोनों प्रभु अपने परमेश्वर का अनुसरण करेंगे तो यह अच्छा होगा" यही RSV कहता है। NIV में केवल "अच्छा" शब्द है। यदि आप ये सभी चीजें अच्छे से करेंगे। अब वह अंतिम वाक्यांश "यह अच्छा होगा या अच्छा होगा," हिब्रू बाइबिल में मसोरेटिक पाठ में नहीं आता है और यदि आपके पास प्रोटैसिस है और अपोडोसिस नहीं है तो वाक्य को पूरा करने के लिए इसे जोड़ना होगा। 1 शमूएल 12:14 का यह अनुवाद किंग जेम्स वर्शन, न्यू अमेरिकन

स्टैंडर्ड वर्शन, न्यू लिविंग ट्रांसलेशन के दूसरे संस्करण के अनुवाद से अलग है, इन सभी के अनुवाद में वही है जो वास्तव में हिब्रू पाठ में वैध है और वह यह है कि इसमें प्रोटैसिस और अपोडोसिस दोनों हैं। और यह पद हिब्रू अनुवाद के साथ बीच में टूट जाता है, जिसमें आमतौर पर “फिर” होता है। तो यह इस तरह से पढ़ा जाता है। “यदि आप प्रभु का भय मानते हैं और उनकी सेवा करते हैं और उनकी आवाज़ सुनते हैं और प्रभु की आज्ञा के विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हैं [प्रोटैसिस] तो [आप अपोडोसिस शुरू करते हैं] आप और आपके ऊपर शासन करने वाला राजा दोनों ही प्रभु अपने परमेश्वर का अनुसरण करेंगे।”

प्रथम और द्वितीय शमूएल के टिप्पणीकार एच.पी. स्मिथ ने बहुत पहले तर्क दिया था और उनके निष्कर्षों का आज भी कई लोग पालन करते हैं, कि पद के मध्य में “तब” [जैसे कि किंग जेम्स और NASB आदि करते हैं] से अपोडोसिस की शुरुआत करना व्याकरण की दृष्टि से सही काम है।” फिर भी स्मिथ का दावा है कि ऐसा करने से एक अतिरेक उत्पन्न होता है क्योंकि यह “एक समान प्रस्ताव बनाता है।” “यदि आप यहोवा का भय मानते हैं आदि तो आप यहोवा का अनुसरण करेंगे।” हालाँकि, जब कोई पद 14 की संरचना की तुलना पद 15 से करता है, तो यह स्पष्ट है कि अपोडोसिस पद के मध्य में “तब” से शुरू होता है, क्योंकि पद 15 में भी यही संरचना है। स्मिथ की व्याख्या अंतिम वाक्यांश की उनकी समझ पर आधारित है: “तब तुम यहोवा का अनुसरण करोगे,” या अधिक शाब्दिक रूप से, “तुम यहोवा के पीछे होगे।” इसका क्या मतलब है? यदि आप यहोवा का भय मानते हैं तो आप यहोवा का अनुसरण करेंगे। यदि आप यहोवा का भय मानते हैं, उसकी सेवा करते हैं, उसकी आवाज़ सुनते हैं, परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हैं, तो आप यहोवा का अनुसरण करेंगे या यहोवा के पीछे होंगे। यह वाक्यांश पुराने नियम में कई अन्य स्थानों पर समान शब्दों में आता है, जिसमें 2 शमूएल 2:10, 15:13, 1 राजा 12:20, 1 राजा 16:21 शामिल हैं। यदि आप उन अन्य स्थानों में इसके उपयोग को देखें, तो उनमें से प्रत्येक में इसका उपयोग यह इंगित करने के लिए किया जाता है कि इस्राएल के लोगों या लोगों के एक हिस्से ने ऐसी स्थिति में एक विशेष राजा का अनुसरण करना चुना है जहाँ कोई दूसरा विकल्प था। 2 शमूएल 2:10 में, यह अभिव्यक्ति यहूदा के दाऊद का अनुसरण करने के निर्णय को संदर्भित करती है जबकि ईश-

बोशेत राष्ट्र के शेष भाग पर शासन करता था। और यह कहता है, " हालाँकि, यहूदा का घराना दाऊद का अनुसरण करता था," या, "दाऊद के पीछे था।" 1 राजा 12:20 में, राज्य के विभाजन के समय यहूदा ने यारोबाम के बजाय दाऊद के घराने का अनुसरण किया, जहाँ आप पढ़ते हैं, "केवल यहूदा का गोत्र दाऊद के घराने के प्रति वफादार रहा," शाब्दिक रूप से "दाऊद के घराने के पीछे था।" यह वही शब्द है जो 1 शमूएल 12:14 में है।

जब कोई इस तरह से अभिव्यक्ति को समझता है और इसे गिलगाल सभा के समय इस्राएल की स्थिति पर लागू करता है , तो कोई कह सकता है कि ईश्वरीय शासन में मानवीय राजतंत्र की शुरूआत के साथ आपने जो बनाया है वह यहोवा और मानवीय राजा के बीच विभाजित वफ़ादारी की संभावना है। यह एक बहुत ही वास्तविक और संभावित खतरा बन गया है। तो शमूएल क्या करता है? वह पुरानी वाचा को सशर्त लेता है जिसे निर्गमन और व्यवस्थाविवरण और यहोशू के माध्यम से कई बार कहा गया है, और इसे एक नया आयाम दिया गया है। शमूएल लोगों और उनके नए स्थापित राजा को यहोवा की आज्ञा मानने और उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध विद्रोह न करने और उसकी आवाज़ सुनने और उसकी सेवा करने आदि के लिए अपने दृढ़ संकल्प को नवीनीकृत करने के लिए चुनौती दे रहा है। और ऐसा करके, यह प्रदर्शित करना है कि वे यहोवा को अपने संप्रभु के रूप में पहचानना जारी रखते हैं। शाब्दिक रूप से, वे "यहोवा के पीछे चलना" जारी रखते हैं।

वाक्यांश की इस समझ को देखते हुए, यह आवश्यक नहीं है, जैसा कि स्मिथ ने किया है, यह निष्कर्ष निकालना कि "यदि आप यहोवा का भय मानते हैं, और उसकी आज्ञा मानते हैं, उसकी आवाज़ सुनते हैं, और उसके विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हैं, तो आप यहोवा का अनुसरण करेंगे," एक अतिरेक है, या एक समान प्रस्ताव है। अतिरेक के बजाय, यह नए युग की शर्तों में वाचा की अभिव्यक्ति है जिसमें अब इज़राइल प्रवेश कर रहा था। यदि इज़राइल और उसका नया राजा यहोवा का भय मानते हैं और उसकी सेवा करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं और उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध विद्रोह नहीं करते हैं, तो वे क्या दिखाएंगे? कि वे यहोवा को अपने संप्रभु के रूप में पहचानना जारी रखते हैं। भले ही मानव राजत्व को ईश्वरतंत्र की संरचना में पेश किया गया हो। दूसरे शब्दों में, ये दो आयतें कह रही हैं कि इज़राइल को यहोवा के प्रति अपनी वफ़ादारी को किसी मानव शासक के प्रति वफ़ादारी से नहीं बदलना चाहिए, अगर कभी दोनों के बीच कोई संघर्ष होता

है, क्योंकि यदि इज़राइल प्रभु के विरुद्ध विद्रोह करता है, जैसा कि आयत 15 कहती है, तो प्रभु का हाथ उसके विरुद्ध होगा जैसा कि उसके अवज्ञाकारी पूर्वजों के विरुद्ध था। तो ये आयतें बहुत ही स्पष्ट रूप से कह रही हैं कि इस्राएल को यहोवा को अपना संप्रभु मानना जारी रखना चाहिए, भले ही राजतंत्र को ईश्वरतंत्र की संरचना में शामिल कर दिया गया हो। और इस्राएल के मानव राजा को भी राष्ट्र पर यहोवा की सर्वोच्च संप्रभुता को पहचानना चाहिए।

अंतिम विश्लेषण में, इसका मतलब यह है कि इस्राएल की यह अपेक्षा कि एक मानव राजा राष्ट्रीय सुरक्षा की गारंटी देगा, एक बुनियादी रूप से दोषपूर्ण विचार था। यदि इस्राएल और उसके राजा प्रभु के प्रति विश्वास और आज्ञाकारिता में खुद को समर्पित नहीं करते हैं, तो राजशाही का कोई मूल्य नहीं होगा। सब कुछ अभी भी, जैसा कि अतीत में हुआ था, यहोवा के साथ इस्राएल के रिश्ते पर निर्भर करता है।

श्लोक 16-22 में, शमूएल के अनुरोध पर, प्रभु ने अपने एकत्रित लोगों को स्वर्ग से एक संकेत के रूप में गरज और बारिश दी, ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि प्रभु के साथ एक सही संबंध राष्ट्र की भलाई का स्रोत है और उन्हें राजा की मांग करने में धर्मत्याग की गंभीरता का विश्वास दिलाया जा सके। यह गेहूं की कटाई का समय था, जो मई के मध्य से जून के मध्य तक होता है; ऐसा समय जब लगभग कभी बारिश नहीं होती थी। इस शुष्क मौसम के दौरान अचानक गरज और बारिश की उपस्थिति ने लोगों को चौंका दिया और राजा की मांग करने में अपने पाप को पहचान लिया और स्वीकार कर लिया।

मैं यहाँ एक और बात कहना चाहूँगा: यह कभी-कभी सुझाव देता है कि इस घटना को न केवल एक प्रमाणिक संकेत के रूप में समझा जाना चाहिए, बल्कि एक ईश्वरीय दर्शन के रूप में भी समझा जाना चाहिए। और आप इस प्रश्न पर चाहे जो भी रुख अपनाएँ, यह स्पष्ट है कि लोगों ने यह समझ लिया था कि गड़गड़ाहट और बारिश सिर्फ़ सैमुअल के शब्दों की पुष्टि नहीं थी, बल्कि, साथ ही, ईश्वर की शक्ति का रहस्योद्घाटन भी थी। इसलिए जबकि प्रमाणिकता संकेत का प्राथमिक कार्य प्रतीत होता है, यह ईश्वरीय दर्शन को भी ले जा सकता है। साथ ही, प्रभु की शक्ति की अद्भुतता के बारे में कुछ बताकर, कई पहलुओं को उजागर किया। मुझे लगता है कि यह

उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर, जब इस्राएल को यहोवा के प्रति अपनी वफादारी को नवीनीकृत करने के लिए चुनौती दी जा रही है, तो एक संकेत दिया गया है जो सिनाई में वाचा की स्थापना के साथ होने वाले संकेत के समान है जब "पहाड़ पर गरज और बिजली चमक रही थी और एक घना बादल था," निर्गमन 19:16। यह मिस्रे में जो हुआ था, उसकी भी याद दिलाता है जब प्रभु ने पलिशियों के खिलाफ गरज कर उन्हें भयभीत कर दिया था, इसलिए वे इस्राएल से हार गए थे। निश्चित रूप से यह एक प्रदर्शन था कि प्रभु इस्राएल के सच्चे उद्धारकर्ता थे और हैं। शमूएल ने तब लोगों को आश्वासन के शब्द दिए। उन्होंने कहा, "डरो मत," परमेश्वर की शक्ति के प्रदर्शन के प्रति उनकी प्रतिक्रिया के बाद, और फिर उन्हें अपने पूरे दिल से प्रभु की पूजा करने और उनके पीछे चलने से पीछे न हटने की सलाह दी। यह वही शब्द है, श्लोक 14 पर वापस जाने के लिए। उन्हें प्रभु के पीछे रहना था, उन्हें अपने संप्रभु के रूप में पहचानना जारी रखना था।

श्लोक 20 कहता है, "शमूएल ने कहा, 'डरो मत, तुमने यह सब बुरा किया है, फिर भी यहोवा से दूर मत हो। बल्कि अपने पूरे दिल से यहोवा की सेवा करो।'" यह कथन, संक्षेप में, वाचा संबंध का मूल दायित्व है। यहाँ, शमूएल इस्राएल में राजत्व की स्थापना के आसपास के विवाद में केंद्रीय मुद्दे को ध्यान में लाता है। बुराई अपने आप में राजत्व नहीं थी, बल्कि यह प्रभु के पीछे चलने से दूर हो जाना था। राजतंत्र की स्थापना के साथ इस्राएल के बच्चों का सर्वोच्च दायित्व नहीं बदला है।

अब उनका कर्तव्य, जैसा कि हमेशा से रहा है, प्रभु का अनुसरण करना था, जो कि पूरे दिल से प्रभु की आराधना करना था। इस्राएल के लिए विकल्प स्पष्ट हैं। श्लोक 21: "मूर्ख मत बनो या बेकार की मूर्तियों (शाब्दिक रूप से, शून्यता) का अनुसरण मत करो। वे तुम्हारा कुछ भला नहीं कर सकते और न ही वे तुम्हें बचा सकते हैं क्योंकि वे बेकार हैं।" वे प्रभु का अनुसरण कर सकते थे और समृद्धि और सुरक्षा पा सकते थे, या वे किसी भी ऐसी चीज़ का अनुसरण कर सकते थे, जो प्रभु के विरुद्ध खुद को ऊंचा उठाती हो। मुझे लगता है कि शमूएल यहाँ यह कह रहा था कि इस्राएल को किसी भी ऐसी चीज़ का अनुसरण नहीं करना चाहिए जो प्रभु की उनकी आराधना को बाधित करती हो या उसकी जगह लेती हो, चाहे वह कोई व्यक्ति हो, कोई राजा हो, कोई राष्ट्र हो, कोई देवता हो, कोई मूर्ति हो, कुछ भी हो! क्योंकि प्रभु के नुकसान के लिए किसी का या किसी चीज़ का अनुसरण

करना कुछ भी नहीं का अनुसरण करना था और कुछ भी आपको बचा नहीं सकता।

शमूएल ने इस चेतावनी के बाद इस अद्भुत वादे को दोहराया कि प्रभु अपने लोगों को कभी नहीं त्यागेंगे। अपने महान नाम की खातिर, प्रभु अपने लोगों को नहीं त्यागेंगे क्योंकि प्रभु ने तुम्हें अपना बनाने में प्रसन्नता व्यक्त की है। फिर पद 23-25 में, शमूएल ने ईशतंत्र की नई व्यवस्था में अपने स्वयं के निरंतर कार्य का वर्णन किया, जो पद 23 में है, और वह इस्राएल के केंद्रीय वाचा दायित्व की पुनरावृत्ति के साथ अपनी टिप्पणी का समापन करता है, जो पद 24 है, इसके बाद पद 25 में इस्राएल के धर्मत्याग करने पर वाचा अभिशाप की धमकी दी जाती है। पद 23 में शमूएल का कथन एक स्पष्ट संकेत है कि वह राष्ट्रीय नेता के रूप में अपनी भूमिका से पीछे हटने का इरादा नहीं रखता था। यह उसका "विदाई संबोधन" नहीं था। पद 23 कहता है, "मेरे लिए यह दूर की बात है कि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करने में विफल होकर प्रभु के विरुद्ध पाप करूँ, और मैं तुम्हें वह मार्ग सिखाऊँगा जो अच्छा और सही है।" शमूएल न केवल लोगों के लिए मध्यस्थता करना जारी रखेगा, एक पुजारी का कार्य, बल्कि वह उन्हें उनके वाचा संबंधी दायित्वों में निर्देश देगा। वह उन्हें अच्छा और सही मार्ग सिखाएगा। अच्छा और सही मार्ग क्या है? यह वाचा का मार्ग है। शमूएल की यह निरंतर गतिविधि शाऊल के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित होगी। जैसे-जैसे शाऊल राजा के रूप में अपनी ज़िम्मेदारियाँ संभालेगा, उसके कार्य हमेशा शमूएल की जाँच के अधीन होंगे जो उसे फटकार लगाने में संकोच नहीं करेगा यदि उसका आचरण राजा के कानून (व्यवस्थाविवरण 17) में वर्णित नियमों से या 1 शमूएल 10:25 के राज्य के तरीके से वाचा के नियमों से, आम तौर पर, या यहाँ तक कि स्वयं शमूएल या किसी अन्य भविष्यवक्ता के माध्यम से दिए गए प्रभु के वचन से विचलित होता है।

लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि शमूएल की निरंतर गतिविधि, एक ऐसा प्रतिमान स्थापित करेगी जो इस्राएल के सिंहासन के सभी भावी निवासियों के लिए मान्य रहेगा। इस समय से इस्राएल में राजाओं के पास कभी भी स्वायत्त अधिकार नहीं होगा। वे हमेशा शमूएल की वंशावली में आने वाले भविष्यवक्ताओं के प्रति जवाबदेह होंगे। प्रेरितों के काम 3 में, शमूएल को भविष्यवक्ताओं के उत्तराधिकार में प्रथम के रूप में वर्णित किया गया है।

पद 24 में, शमूएल वर्णन करता है कि लोग उस अच्छे और सही मार्ग पर कैसे चल सकते थे। वह कहता है, “यहोवा का भय मानो, पूरे दिल से उसकी सेवा करो। सोचो कि उसने तुम्हारे लिए क्या-क्या बड़े-बड़े काम किए हैं।” यहोशू 24 में उससे पहले यहोशू की तरह, शमूएल ने इस्राएल के वाचा दायित्वों के मूल को उन शब्दों में तैयार किया, जो यहोवा के प्रति पूर्ण निष्ठा की मांग करते थे, जो उनके लिए किए गए महान कार्यों के लिए हार्दिक कृतज्ञता से पैदा हुई निष्ठा थी। इन महान कार्यों में यहोवा द्वारा अपने लोगों के लिए किए गए प्रावधान शामिल थे, जिन्हें शमूएल ने अध्याय में पहले पद 8 और उसके बाद के अध्याय में संक्षेप में प्रस्तुत किया था, लेकिन उनमें अम्मोनियों पर हाल ही में की गई जीत, लोगों के पापपूर्ण अनुरोध के बावजूद राजा का दिया जाना, लोगों की भलाई के लिए यहोवा की चिंता के संकेत के रूप में गरज और बारिश भेजना भी शामिल था। निश्चित रूप से यहोवा अपने लोगों के प्रति दयालु और वफादार रहा था। उनका दायित्व उनके लिए उनके द्वारा किए गए सभी कार्यों के लिए कृतज्ञता में उनके प्रति पूर्ण और पूर्ण निष्ठा थी।

शमूएल ने लोगों को चेतावनी देते हुए सभा का समापन किया कि प्रभु से दूर जाने में लगातार लगे रहने से अंततः राष्ट्र और उसके राजा का विनाश होगा। इस अध्याय को पहले और दूसरे शमूएल में कुछ अन्य की तुलना में अधिक विस्तार से बताया गया है, क्योंकि इसका न केवल शमूएल की पुस्तकों में, बल्कि पूरे बाइबल में महत्वपूर्ण महत्व है। इस अध्याय में संबोधित मुद्दे पुराने नियम के शेष भाग में नए नियम में और इस मामले में, अंतिम समय में छुटकारे के इतिहास के प्रवाह के लिए मार्ग निर्धारित करते हैं। इसका कारण यह है कि यह अध्याय हमें *इस्राएल* में राजत्व के उद्घाटन के बारे में बताता है। इस्राएल में राजत्व किसी भी अन्य राष्ट्र के राजत्व से स्पष्ट रूप से भिन्न था, क्योंकि यह एक वाचाबद्ध राजत्व था। अर्थात्, इसे प्रभु के अपने लोगों पर शासन करने का एक साधन बनने के लिए डिज़ाइन किया गया था। राजत्व छुटकारे के इतिहास के चल रहे प्रवाह में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है क्योंकि इसका मसीहाई उम्मीद और 2 शमूएल में दाऊद को दिए गए वादे के साथ घनिष्ठ संबंध है कि उसका राजवंश हमेशा कायम रहेगा। जब इस्राएल के राजा वाचा के आदर्श पर खरा उतरने में असफल रहे, तो भविष्यवक्ताओं ने एक दिव्य मानव राजा की बात करना शुरू कर दिया, जो भविष्य में किसी दिन पृथ्वी पर शांति और न्याय स्थापित करेगा।

नए नियम में इस राजा के अपने लोगों के पास आने और नासरत के भविष्यवक्ता यीशु के

व्यक्तित्व का वर्णन है। उनके जन्म के समय और उनके शिक्षण मंत्रालय के दौरान, यीशु को दाऊद के पुत्र के रूप में पहचाना गया और पुष्टि की गई। क्रूस पर चढ़ने से ठीक पहले, वह गधे पर सवार होकर यरूशलेम में सार्वजनिक रूप से घोषणा करने के लिए आया था कि वह वही है जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि वह किसी दिन दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा। इसके बाद उसने महासभा के सामने पुष्टि की कि वह मसीहा था, भले ही उसके पहले आगमन पर, उसका प्राथमिक मिशन पीड़ित सेवक की भूमिका में आना था जो अपने लोगों के पापों का प्रायश्चित्त करेगा। प्रारंभिक चर्च ने स्पष्ट रूप से समझा कि यीशु वास्तव में पुराने नियम के शास्त्रों में वादा किया गया मसीहा था, और प्रेरितों ने यह समझाने में सावधानी बरती कि ऐसा क्यों था कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, पुनर्जीवित किया गया और स्वर्ग में चढ़ाया गया। यीशु और प्रेरितों दोनों ने भविष्य के दिन की बात की जब यीशु वापस आएगा और सभी चीजों को बहाल करेगा। बाइबल की अन्तिम पुस्तक में, दाऊद के घराने के शाही व्यक्ति के आगमन को, प्रकाशितवाक्य 22:16 में, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की मसीहाई अपेक्षा की सम्पूर्णता और महिमा में चित्रित किया गया है।

इसलिए जब हम पहले और दूसरे शमूएल की चर्चा पर वापस आते हैं, तो सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इस्राएल के पहले मानव राजा शाऊल का शासन असफल साबित हुआ, क्योंकि वह अपने पद की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाया। जब उसे भविष्यवक्ता शमूएल के माध्यम से दिए गए प्रभु के वचन की अवज्ञा के कारण राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया गया, तो उसे दाऊद द्वारा सिंहासन पर बिठाया गया, जिसे “परमेश्वर के अपने दिल के अनुसार एक व्यक्ति” के रूप में चित्रित किया गया था। तब दाऊद को यह उल्लेखनीय वादा दिया गया था कि उसका राजवंश हमेशा के लिए कायम रहेगा (2 शमूएल 7)। हालाँकि, यह हमें राजत्व और वाचा के विषय पर वापस लाता है और इस अवलोकन पर कि शाऊल द्वारा अभ्यास किया गया राजत्व वाचा के आदर्श के अनुरूप नहीं था। हम अपने अगले व्याख्यान में इस प्रस्ताव पर विचार करेंगे।

लिप्यंतरित: शेल्बी लिन्सी -वॉन, ऑड्रा सियर्स, एलेसिया कोलेल्ला, टेड हिल्डेब्रांट, नाथन वोल्टर्स,
जोश स्नेल और मारिया कॉन्स्टैंटाइन द्वारा संपादित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित